Model Answer

AS-3046

B.Com. LL.B. (Third Semester) Examination-2013

(Foundation Course-Hindi)

प्र.१ - निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नो के उत्तर दीजिये- १५*२=३०

(i) (क) देवनागरी लिपि मनुष्य के भावों और विचारों को संप्रेषित करने का माध्यम है।

(ख) देवनागरी लिपि में स्वरों की व्यवस्था में पहले ह्रस्व,फिर दीर्घ,स्वर क्रम पूर्वक नियोजित है। इसके अतिरिक्त स्वर और व्यंजन अलग-अलग लिखे जाते है।

(ii)(क) व्याकरणसम्मतता (ख) स्वाभाविक और सुबोध (ग) स्वायत्तता (घ) केंद्रोन्मुखता

(iii) किसी सुसंगठित एवं गुंफित विचार अथवा भाव के विस्तार कों पल्लवन कहते है। इत्यादि

(iv) वाल्मीकि तथा ब्राह्मण

(v)(क) संक्षेपण स्वत: पूर्ण होना चाहिए (ख) संक्षिप्तता (ग) भाषा की सरलता (घ)शुद्धता (ड) प्रवाह और क्रमबद्धता

(vi) "पंडित के घर में घोर मूर्खता का आचरण" तथा "दुहरा लाभ"

(vii) हिन्दी में व्यंजनों की संख्या '41' होती है।

(viii) महादेव :- शम्भु, ईश, पशुपति,शिव,महेश्वर,शंकर,चंद्रशेखर,भव,भूतेश,गिरीश,त्रिलोचन।

अग्नि:- आग, पावक, अनल, वायुसखा, दहन, धूमकेतु, कृशानु, वह्नि।

(ix) हरिशंकर परसाई।

(x) चतुर्भुज तथा अतिथि।

(xi) मुहाविरा।

(xii) नशा, पंच परमेश्वर, पुस की रात, बड़े घर की बेटी, ईदगाह, ठाकुर का कुआ इत्यादि

(xiii) दो अपरिचित व्यक्ति।

(xiv) गुलशेर खाँ शानी

(xv) अतिथि:- मेहमान, साधु, यात्री, अपरिचित व्यक्ति, यज्ञ में सोमलता लाने वाला अग्नि, राम का पोता या कुश का बेटा।

अपेक्षा:- इच्छा, आवश्यकता, आशा, बनिस्पत इत्यादि,

प्र.२ लघुत्तरी प्रश्न - **५*४=२०**

(i) सप्रसंग व्याख्या -

कभी ऐसा ..... पर ऐसा कभी नहीं हुआ था।

लेखक का नाम - हरिशंकर परसाई

गद्य की विधा - कहानी

व्याख्या:- यह एक सामाजिक व्यंग्य कहानी के रूप मे लिखी गयी है। अंधविश्वास स्वर्ग व नरक को लेकर लिखा गया हैं। रिश्वत खोरी को चर्म सीमा तक बड़ाकर दिखाया गया है। भारतीय संस्कृति पर रिश्वत खोरी किस कदर हावी है। सामान्य आदमी का जीना दुभर हो गया है इत्यादि।

(ii)(क) दो मित्रों की आपसी मित्रता को लेकर लिखी गयी कहानी है। आपसी झगड़े के निपटारे, गाँव की पंचायत और पंच के व्यक्ति को सम्मान दिया गया है। गाँव के व्यक्ति किस प्रकार गलत या सही फैसला सुनने के बड़ उस फैसले को ईश्वर के समान फैसला माना जाता है। रिश्ते और भाई-चारे न्याय के आगे झुक जाते है।

(iii) कहानी का लेखन व प्रकाशन वर्ष, पत्रों का विवरण, लेखक ने रिश्वत खोरी की समस्या को बेहतर संजीदगी से दिखाने का प्रयास किया हैं। नौकरी करने के बाद एक गरीब व्यक्ति पेंशन के लिए किस तरह आफिस का चक्कर लगता है जहां केवल उसे आस्वासन मिलता है लाभ नहीं। गरीबों की दशा तथा दिशा का चित्रण किया गया है। अंत मे भोलाराम पैसा न मिलने से तंग आकर विमार पड़ जाता है, घर में खाने को कुछ नहीं रहता है घर सारे सामान बेचकर परिवार का भरण-पोषण करना पड़ता हैं। अन्ततः भोलारम की मृत्यु होती है और उसकी आत्मा आफिस के फाइलों में रह जाती है।

(iv) हमारे समाज मे लोग यही जानते है कि कम्प्यूटर की भाषा सिर्फ अँग्रेजी है और लिपि रोमन। हिन्दी भाषा विश्व की अनेक भाषाओं की तुलना में वाक्य विज्ञान, ध्वनि विज्ञान, और रैखिक दृष्टि से अधिक सुनियोजित है। देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है। कम्प्यूटर को हिन्दी में संगणक कहा जाता है। इस सूत्र को आधार मानकर ध्वनियों के आधार पर ११ भारतीय भाषाओं के लिए एक ऐसा समन्वित कोड विकसित किया गया। कुंजीपटल को ध्वन्यात्मक कुंजीपटल (फोनेटिक की बोर्ड) कहते है। इस समय यह कोडिंग प्रणाली सी-डैक के जिस्ट, लीप, इज़्म आदि। हिन्दी शब्द कोशों की वर्णक्रम पद्धति के अनुसार अनुस्वार वाले शब्द क्रम में सबसे पहले आते है। आधा 'न' वाले शब्द सबसे अंत मे।

(v) आधुनिक युग मे। संक्षेपण का महत्व, कार्यालयों में संक्षेपण का अधिक प्रयोग किया जाता है। संक्षेपण में 'मूल' के उन्हीं शब्दो को रखना चाहिए, जो अर्थव्यंजना में सहायक हों। भाषा सरल होनी चाहिए, मुहावरेदार और अलंकारिक नहीं। मूल तथ्य से असंबद्ध और अनावश्यक शब्दों को छांटकर निकाल देना चाहिए।

(vi) आधुनिक युग में पल्लवन का उपयोग दिन-प्रतिदिन घटता जा रहा है। पल्लवन के लिए मूल अवतरण के वाक्य, सूक्ति, लोकोक्ति, अथवा कहावत को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए कार्यालयों मे इसका प्रयोग नहीं किया जाता । पल्लवन व्यासशैली की होनी चाहिए, समासशैली की नही। सभी व्यक्ति समय की बचत करना चाहते हैं क्योंकि आधुनिक युग मे सबको समय का अभाव है।

(vii) देवनागरी लिपि में स्पष्टता की विशेषता भी है प्रत्येक लिखित वर्ण उच्चरित भी होते हैं। जो पढ़ा जाता है वही लिखा जाता। यह एक वैज्ञानिक लिपि है। आधार संस्कृत होने के

कारण इसे देव वाणी भी कहा जाता है इसके प्रत्येक वर्ग में पहले अल्पप्राण व्यंजन आता है फिर उसका महाप्राण व्यंजन आता है। अन्य लिपियों में ऐसा नहीं है।

(viii) आधुनिक युग में अनुवाद का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाता है क्योंकि मीडिया, दूरसंचार तथा टेलिविजन की आवश्यकता ने इसकी उपयोगिता बढ़ा दी है। घर बैठे आप कई संस्कृतियों, परिवेश, रहन-सहन, वेश-भूषा का अध्ययन कर सकते है। समाज में दिनों-दिन इसकी उपयोगिता बढ़ती जा रही है।

प्र.३:- दीर्घ उत्तरीय प्रश्न - **२*१५=३०**

(i) यह विचार पंडित जवाहलाल नेहरू का है। राष्ट्र की आत्मा सशक्त और दीर्घजीवी होती है। मनुष्य के साथ जीना-मारना सदा लगा रहता है। राष्ट्र की शक्ति उसके नागरिक, उसकी संस्कृति, उसका साहित्य, उसकी परम्परा और उसकी ऐतिहासिक चेतना में है। 'राष्ट्र' की परम्परा और इतिहास की चेतना ही प्रधान होती है। व्यक्ति के मरने से राष्ट्र नहीं मरता। नश्वर व्यक्ति के द्वारा राष्ट्रियता की सांप्रदायिक नारेबाजी तो और भी बड़ी मूर्खता है। नर-नारी के जनमते-मरने पर भी राष्ट्र अमर है, बल्कि राष्ट्र की जो संस्कृति और राष्ट्रीयता है, वह सारे राष्ट्र के लिए नागरिकों के लिए समान भावना रखती है।

(ii) 'बस्तर में बाघ' संस्मरण के लेखक का नाम तथा प्रकाशन वर्ष। कोसी को बाघ द्वारा मारे जाने के बाद गाँव में वालों आपसी एकता की बात लेखक द्वारा दर्शाया गया है एकता विचार का वर्णन कीजिए। अंधविश्वास आज भी अनुसूचित जनजातियों मे किस कदर हावी है इसका एक प्रमुख कारण है शिक्षा और जागरूकता का अभाव। शानी जी ने बेहत्तर संजीदगी से आदिवासियों की परिस्थितियों की संवेदना का परिचय कराया है। आधुनिक युग में भी आदिवासी का जनजीवन बेहद अस्त-व्यस्त है।

(iii) आधुनिक युग में अनुवाद का महत्व बढ़ता जा रहा है क्योंकि अनुवाद के द्वारा लक्ष्य भाषा से स्रोत भाषा की संस्कृतियों, वातावरण परिवेश, रहन-सहन,लोकोक्ति, मुहावरा, तीज-त्योहार आदि का पता चलता है। ज्ञान-विज्ञान के इस समुन्नत काल मेँ अनुवाद की प्रासंगिकता पर विचार होना चाहिए। अनुवाद सार्थक अथवा प्रयोजन युक्त पुनर्कथन है। आदर्श अनुवाद सीरिंज की वह सुई है जो सीरिंज की दवा को ज्यों-का-त्यों मरीज के शरीर में पहुँचा देती है।